भारत की लुक-ईस्ट नीति और मलेशिया

डॉ. एन.के. सोमानी और डॉ. नीलम शर्मा

प्रस्तावनाः

मलेशिया दक्षिण पूर्व एशिया का एक समृद्ध देश है। इस उष्णकटिबंधीय देश को दक्षिण चीन सागर दो भागों में विभाजित करता हैं । मलय प्रायद्वीप पर स्थित कुआलालुपुर देश की राजधानी है। हाल ही में संघीय राजधानी को खासतौर से प्रशासन के लिए बनाए गए नए शहर पुत्रजया में स्थानांतरित कर दिया गया है। मलेशिया लगभग 30 मिलियन आबादी वाला एक उदार मुस्लिम राष्ट्र हैं। इसकी विकास दर लगभग 5 प्रतिशत के आस–पास है। पूरा मलेशिया 13 राज्यों और 3 संघीय प्रदेश में बटा हुआ है। मलेशिया के संवैधानिक प्रमुख को यांग डी–पेर्तुआन (राजा) कहा जाता है। वर्तमान में यह पद सुल्तान मिजान जैनुल अबीदीन धारण किए हुए है।

भारत और मलेशिया के बीच ऐतिहासिक संबंध रहे हैं। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में दोनों देशों ने आपसी सहयोग व समझ की लंबी यात्रा तय की है। हाल ही में दोनों देशों ने अपने संबंधों की 65 वीं वर्षगांठ मनाई हैं। मलेशिया भारत की लूक–ईस्ट नीति के केन्द्र में हैं। चीन को कांउटर करने में भी मलेशिया भारत का अहम सहयोगी हो सकता है। जिस तरह से चीन दक्षिण एशिया में भारत के पिछवाड़े में तेजी से सक्रिय होता जा रहा है, उसी तर्ज पर भारत से भी दक्षिण पूर्व एशिया में चीन के पिछवाड़े पर समान रूप से ध्यान केंद्रित करने की उम्मीद की जा सकती है।9 ऐसे में भारत–मलेशिया संबंधों में तनाव के चलते दोनों ही देशों को राजनयिक नुकसान भी उठाने पड़ सकते हैं। शांति, स्थिरता और आर्थिक समृद्धि के समक्ष खतरा पैदा करने वाले कारकों से निबटने के लिए दोनों देशों को साथ मिलकर काम करते रहने की नीति पर आगे बढ़ना होगा।

भारत–मलेशिया संबंधों का इतिहासः

भारत और मलेशिया के बीच राजनीतिक और सांस्कृतिक संबंधों का युगों पुराना इतिहास हैं। साल 1957 में मलाया परिसंघ (मलेशिया का पूर्ववर्ती राज्य) की स्वतंत्रता और औपनिवेशिक शासन के अंत के बाद भारत और मलेशिया के बीच कूटनीतिक संबंधों की शुरूआत हुई।1 कूटनीतिक संबंधों की स्थापना के बाद भारत और मलेशिया आर्थिक तथा सामरिक क्षेत्र में संबंधों को मजबूत करने की दिशा में आगे बढ़े। दोनों देशों के बीच आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और रणनीतिक मोर्चों पर निरन्तर आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। द्विपक्षीय वार्ताओं से इतर विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी दोनों देश सहयोग एवं समन्वय की भावना के साथ आगे बढ़ते हुए दिखाई दे रहे हैं। शीतयुद्ध के दौरान भी दोनों देश निर्गुट देशों के साथ रहते हुए आपसी संबंधों को मजबूत बनाए रखने की दिशा में काम करते रहे।

1962 के भारत–चीन युद्ध के समय मलेशिया अकेला ऐसा दक्षिण–पूर्वी देश था जिसने न केवल भारत का साथ दिया था बल्कि भारत को युद्ध में सहायता के लिए एक आर्थिक कोष की स्थापना की थी।2 वहीं दूसरी ओर 1965 के इंडोनेशिया–मलेशिया विवाद में भारत ने मलेशिया का साथ दिया था। भारत के इस रवैय का असर बाद में भारत–इंडोनेशिया संबंधों पर भी पड़ा । एक मुस्लिम बहुल देश होने और पाकिस्तान की तमाम कोशिशों के बावजूद मलेशिया के साथ भारत के संबंध लगभग मधुर ही बने रहे।

भारत–मलेशिया सहयोग के अपने क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय आयाम भी है। दोनों गुटनिरपेक्ष आदोलान (NAM), जी–15, जी–77, राष्ट्रमंडल, विश्व व्यापार संगठन, आसियान क्षेत्रीय मंच (एआरएफ), पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन व हिंद महासागर रिम–क्षेत्रीय सहयोग संघ (आईओआरएसी) जैसे विभिन्न मंचों के सामान्य सदस्य है। । भारत हमेशा गुटनिरपेक्ष आंदोलन में मलेशिया की सक्रिय भूमिका का समर्थन करता रहा है। दूसरी ओर मलेशिया आसियान में एक प्रयवेक्षक राष्ट्र के रूप में भारत की स्थिति का समर्थन करता है। 1993 में रक्षा सहयोग के द्विपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर के बाद दोनों देशों के बीच उच्च स्तरीय यात्राओं और वार्ताओं का सिलसिला शुरू हुआ। नियमित अंतराल के बाद होने वाली शासनाध्यक्ष व राष्ट्राध्यक्षों की यात्राओं से भारत–मलेशियां संबंधों को नया आयाम मिला है। भारत और मलेशिया सशस्त्र बलों के बीच अधिक तालेमल ओर अंतर–संचालन बनाने के लिए प्रतिवर्ष संयुक्त सैन्य अभ्यास 'हरिमऊ शक्ति' करते हैं।3

साल 2022 में भारत और मलेशिया ने अपने राजनियक संबंधों के 65 साल पूरे कर लिए हैं। इस मौके पर कुआलालंपुर कन्वेंशन में इंडिया–मलेशिया 65 कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर मलेशिया के विदेशमंत्री ने कहा कि भारत और मलेशिया के लोगों के बीच सिर्फ द्विपक्षीय संबंध नहीं हैं, बल्कि एक सभ्यतागत सबंध है। हालांकि, पारंपरिक रूप से दोनों देशों के संबंध घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण रहे हैं। लेकिन राजनीतिक स्तर पर पिछले कुछ सालों में भारत–मलेशिया संबंधों में तनाव के कुछ बिन्दू उभरे हैं।

21 वीं सदी में भारत–मलेशिया संबंधः

मलेशिया दुनिया की सबसे तेज गति से बढ़ती अर्थव्यवस्था वाले देशों के समूह आसियान का एक अत्यंत महत्वपूर्ण सदस्य है। यह भारत का महत्वपूर्ण निवेश भागीदार है। आर्थिक और व्यावसायिक हित भारत–मलेशिया संबंधों की आधारशिला कही जाती है। मलेशिया आसियान क्षेत्र में हमारा सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है। दिलचस्प बात यह है कि मलेशिया में भारतीय निवेश और भारत में मलेशियाई निवेश लगभग समान ही रहा है। 2007 के आरंभ में रिलायंस, थापर ग्रुप व लार्सन एंड टूब्रो जैसी प्रमुख भारतीय कंपनियों ने मलेशिया में लगभग एक बिलियन अमरीकी डालर का निवेश किया है। 1.6 बिलियन अमरीकी डालर के साथ भारत मलेशिया का सातवां सबसे बड़ा निवेशक हैं। मलेशिया भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई)करने वाले देशों की सूची में 25 वें स्थान पर है। अप्रेल 2000 से सितंबर 2016 के बीच मलेशिया ने 827.88 मिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश किया है।

वर्तमान में मलेशिया में 100 से अधिक भारतीय कंपनियां कार्यरत है। मलेशिया से बाहर मलेशियाई विनिर्माण कंपनियों की सबसे बड़ी उपस्थिति भारत में ही हैं। दोनों देश शिक्षा, मानव संसाधन विकास, संचार व सूचना प्रौद्योगिकी, प्रतिरक्षा, पर्यटन, संस्कृति और रेलवे जैसे अहम क्षेत्रों में मिल कर काम कर रहे हैं। इसके अलावा भारत और मलेशिया की विभिन्न सरकारी एजेंसियों ने द्विपक्षीय समझौतों पर हस्ताक्षर किए है। इनमें निवेश, निर्माण, निजीकरण और बंदरगाहों के प्रबंधन, सूचना प्रौद्योगिकी, सिविल सेवा कार्मिक प्रबंधन और लोक प्रशासन में आपसी सहयोग के क्षेत्र प्रमुख है। मलेशिया में भारत के लगभग 2000 छात्र अध्ययन कर रहे हैं, वहीं दूसरी और 3000 से अधिक मलेशियाई छात्र भारत के विभिन्न संस्थानों में अध्ययन कर रहे हैं। मलेशिया में भारतीय मूल के करीब 24 लाख लोग निवास करते हैं, जो वहां की कुल जनसंख्या (33 मिलियन) का आठ प्रतिशत है। जहां तक दोनों देशों के बीच हवाई यातायात का सवाल है, तो 2007 में एक द्विपक्षीय समझौते के बाद भारत–मलेशिया के विभिन्न शहरों को जोड़ने वाली लगभग 170 साप्ताहिक उड़ाने उपलब्ध है।

प्रधानमंत्री मोहम्मद नाजिब तुन अब्दुल रज्जाक की भारत यात्रा (19–23 जनवरी, 2010):

जनवरी 2010 में मलेशिया के प्रधानमंत्री महामहिम मोहम्मद नाजिब तुन अब्दुल रजाक भारत आए। साल 2009 में रजाक के सत्ता में आने के बाद प्रधानमंत्री के रूप में यह उनकी पहली यात्रा थी। रज्जाक की भारत यात्रा भारत–मलेशिया सबंधों को गहन बनाने तथा इन संबंधों को और आगे ले जाने की दिशा में दोनों देशों की साझी इच्छा को प्रतिबिंबित करती हैं। इससे पहले नाजिब जून 2006 में उपप्रधानमंत्री की हैसियत से भारत की यात्रा पर आए थे। इस यात्रा के दोनों देशों के बीच

डॉ. एन.के. सोमानी
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति-विज्ञान विभाग
डॉ. नीलम शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग,
एमजेजे गर्ल्स कॉलेज, सूरतगढ़, जिला- श्रीगंगानगर राजस्थान

विज्ञान और प्रौद्योगिकी, ऊर्जा एवं शिक्षा आदि से सबंधित 13 समझौतों पर हस्ताक्षर हुए।4

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहनसिंह की मलेशिया यात्रा(26–28 अक्टूबर, 2010) भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने भारत–आसियान और पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए अक्टूबर 2010 में मलेशिया की यात्रा की। डॉ. मनमोहन सिंह की इस यात्रा को भारत और मलेशिया के बीच सामरिक सहयोग की रणनीति तैयार करने की दृष्टि से काफी अहम माना जाता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मलेशिया यात्रा (नवंबर 2015): भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व्यापार संबंध बनाने और निवेश आकर्षित करने और भारत–आसियान शिखर सम्मेलन और 10 वें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए चार दिन की यात्रा पर सिंगापुर और मलेशिया गए। इस यात्रा के दौरान पीएम मोदी ने सर्वप्रथम एक एशिया का विचार देने वाले स्वामी विवेकानंद की 12 फुट ऊंची कांस्य प्रतिमा का अनवारण किया। दोनों देशों ने वर्तमान सामरिक सहयोग को अधिक गहन बनाने तथा आपसी सहयोग के नए क्षेत्र तलाशने पर अपनी प्रतिबंद्धता प्रकट की।5 यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम, परियोजना वितरण और निगरानी तथा साइबर सुरक्षा पर सहयोग को लेकर समझौता हुआ।

प्रधानमंत्री मोहम्मद नजीब तुन अब्दुल रजाक की भारत यात्रा (अप्रेल 2017):
भारत के प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी के निमंत्रण पर मलेशिया के प्रधानमंत्री मोहम्मद नजीब तुन अब्दुल रजाक अप्रेल 2017 में भारत की यात्रा पर आए । साल 2009 में प्रधानमंत्री के रूप में पदभार ग्रहण करने के बाद नजीब की यह तीसरी भारत यात्रा थी। इस यात्रा के दौरान नजीब चेन्नई और जयपुर भी गए। 1 अप्रेल 2017 को नई दिल्ली स्थित हैदराबाद हाऊस में दोनों देशो के प्रधानमंत्रियों के मध्य प्रतिनिधिमंडलीय वार्ता संपन्न हुई। वार्ता में वायु सेना समझौते तथा दोनों देशों द्वारा एक दूसरे की शैक्षिक योग्यताओं को पारस्परिक मान्यता देने संबंधी समझौते हुए। यात्रा के दौरान नजीब ने कहा कि मलेशिया ने द्विपक्षीय संबंधों की पूरी क्षमता का एहसास नहीं किया है, लेकिन कुछ हद तक भारतीय अर्थव्यवस्था में देर से रूचि दिखा रहा है।6 यात्रा के दौरान दोनों देशों ने बहुसंस्कृतिवाद, लोकतंत्र और बहुलवाद के प्रति अपनी मजबूत प्रतिबद्धता को भी जाहिर किया । दोनों देशों सुरक्षा और रक्षा क्षेत्र के साथ–साथ स्वास्थय और शिक्षा क्षेत्र में मजबूत सहयोग और पर्यटन आधारित सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए सहमत हुए। इसके अलावा दोनों देशों ने नागरिक उडयन व मानव संसाधन विकास सहित सात समझौतों पर हस्ताक्षर किए।7

नरेंद्र मोदी की मलेशिया यात्रा 2018 :
मई 2018 में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दक्षिण–पूर्वी एशिया के तीन देश–इंडोनेशिया, मलेशिया तथा सिंगापुर की यात्रा पर गए। अपनी यात्रा के दूसरे चरण में 31 मई, 2018 को प्रधानमंत्री कुछ देर के लिए कुआलालुपुर रूके जहां उन्होंने मलेशिया के नए प्रधानमंत्री डॉ. महाथिर मोहम्मद से पेरदाना पुत्र कॉम्पलेक्स स्थित उनके दफतर में मुलाकात की।8 द्विपक्षीय वार्ता के दौरान दोनों प्रध ाानमंत्रियों ने आर्थिक तथा सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए आपसी सहयोग बढ़ाने पर चर्चा की।

संबंधों में खटास का कालः
साल 2018 में महाथिर मोहम्मद के सत्ता में आने के बाद भारत–मलेशिया संबंधों में खटास का दौर शुरू हो गया। भारत–मेलेशिया संबंधों में खटास की एक बड़ी वजह कटरपंथी इस्लामिक प्रचारक एवं भारत में टेरर फंडिग के आरोपी जाकिर नाइक है, जो मलेशिया में छिपा हुआ है। भारत सरकार की तमाम कोशिशों और दोनों देशों की बीच प्रत्यर्पण संधि होने के बावजूद जाकिर नाइक को भारत न सौंपने के मलेशियाई सरकार के निर्णय ने भारत–मलेशिया संबंधों में तनाव की स्थिति पैदा कर दी है।

2011 में दोनों देशों के बीच प्रत्यर्पण संधि और 2012 में आपराधिक मामलों में एक दूसरे की कानूनी सहायता संबंधी समझौता होने के बावजूद मलेशिया सरकार जाकिर नाइक को भारत सौंपने के लिए तैयार नहीं है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारतीय विदेश मंत्रालय की गुजारिश के बावजूद महाथिर ने जाकिर नाइक को यह कहकर भारत भेजने से मना कर दिया है कि वहां उसकी जान को खतरा हो सकता है। इतना ही नहीं अब मलेशिया ने उसे स्थाई निवासी का भी दर्जा दे दिया है। सच तो यह है कि जाकिर नाइक मलेशिया के मलय मुसलमानों में बेहद लोकप्रिय है। मलेशिया की कुल आबादी का 60 फीसदी हिस्सा मलय मुसलमानों का है। मलयों की बहुसंख्यक आबादी का मलेशियाई सरकार के निर्माण अहम योगदान रहता है। यही वजह है कि साल 2014 के आम चुनावों के दौरान तत्कालीन प्रधानमंत्री

मोहम्मद रज्जाक और फिर बाद में प्रधानमंत्री बने मोहम्मद महाथिर दोनों ने जाकिर नाइक की लोकप्रियता को अपने चुनाव प्रचार अभियान में हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया था। ऐसे में अगर मोहम्मद महाथिर नाइक के प्रत्यर्पण पर राजी होते हैं तो उन्हें इसका खामियाजा भुगतना पड़ सकता है।

इसके अलावा कश्मीर का मुद्दा भी भारत–मलेशिया संबंधों में तनाव की एक बड़ी वजह बना हुआ है। दरअसल, अगस्त 2019 में जब भारत ने जम्मू–कश्मीर राज्य को विशेष राज्य का दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 को समाप्त कर उसे जम्मू और कश्मीर एवं लद्दाख नामक दो केंद्र शासित प्रदेश में रूप में स्थापित करने की घोषणा की उस वक्त महाथिर मोहम्मद उन देशों के राष्ट्र प्रमुखों के साथ खड़े थे जो पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान के सुर में सुर मिला कर भारत के इस निर्णय की आलोचना कर रहे थे। पाकिस्तान ने जब कश्मीर का मामला संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में उठाया तब भी मलेशिया पाकिस्तान के साथ खड़ा था। संयुक्त राष्ट्र महासभा में माहथिर ने कश्मीर का मुद्दा उठाते हुए कहा कि भारत ने कश्मीर पर आक्रमण कर उस पर कब्जा जमा रखा है। तुर्की और पाकिस्तान की प्रतिक्रिया के लिए तो भारत पहले से ही तैयार था किंतु मलेशियाई प्रधानमंत्री की ओर से इस तरह का बयान आएगा इसकी भारत को जरा भी उम्मीद नहीं थी। संयुक्त राष्ट्र में कश्मीर पर बयान देकर मलेशिया ने पाकिस्तान से बढ़ती करीबी और भारत से संबंधों पर पड़ते इसके असर को उजागर कर दिया है। इतना ही नहीं वे नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) को लेकर भी महाथिर भारत की आलोचना कर चुके हैं। महाथिर मोहम्मद द्वारा बार–बार भारत विरोधी बयान देते रहने की प्रवृति का असर दोनों देशों के व्यापार संबंधों पर भी पड़ने लगा। महाथिर के भारत विरोधी बयानों से सुब्ध होकर भारत ने मलेशिया को सबक सिखाने के लिए मलेशिया से आने वाले पाम ऑयल के आयात में पहले कटौती की और बाद में इस पर रोक लगा दी । मलेशिया की अर्थव्यवस्था काफी हद तक पाम ऑयल के कारोबार पर निर्भर है। भारत हर साल लगभग 90 लाख टन पाम तेल मलेशिया से आयात करता है। मलेशिया के साथ संबंधों में खटास आने के बाद भारत के व्यापारियों ने देश में खाने के तेल की जरूरतों को पूरा करने के लिए मलेशिया की जगह इंडोनेशिया से पाम ऑयल की खरीद बढ़ा दी है। भारत के इस कदम से मलेशिया की अर्थव्यवस्था प्रभावित होने लगी।

परिणामस्वरूप महाथिर ने भारत से संबंध पूनः बेहतर करने के लिए कश्मीर मुद्दे पर कि गई अपनी टिप्पणी के लिए खेद व्यक्त किया और भारत–मलेशिया व्यापार संबंधों की बहाली की उम्मीद जताई।

निष्कर्षः
उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारत और मलेशिया के बीच ऐतिहासिक संबंध रहे हैं। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में दोनों देशों ने आपसी सहयोग व समझ की लंबी यात्रा तय की है। हाल ही में दोनों देशों ने अपने संबंधों की 65 वीं वर्षगांठ मनाई है। मलेशिया भारत की लूक–ईस्ट नीति के केन्द्र में हैं। चीन को कांउटर करने में भी मलेशिया भारत का अहम सहयोगी हो सकता है। जिस तरह से चीन दक्षिण एशिया में भारत के पिछवाड़े में तेजी से सक्रिय होता जा रहा है, उसी तर्ज पर भारत से भी दक्षिण पूर्व एशिया में चीन के पिछवाड़े पर समान रूप से ध्यान केंद्रित करने की उम्मीद की जा सकती है।9 ऐसे में भारत–मलेशिया संबंधों में तनाव के चलते दोनों ही देशों को राजनयिक नुकसान भी उठाने पड़ सकते हैं। शांति, स्थिरता और आर्थिक समृद्धि के समक्ष खतरा पैदा करने वाले कारकों से निबटने के लिए दोनों देशों को साथ मिलकर काम करते रहने की नीति पर आगे बढ़ना होगा।

संदर्भः
1. देवेन्द्र सिंह चौहान, 12 सिंतबर 2022, दैनिक जागरण
2. भारत–मलेशिया संबंधः तनाव का दौर ाजचेय?? ूकीलमलंपेंण्बवउ
3. भारत, मलेशिया ने शुरू किया सैन्य अभ्यास, राजेश्वरी पिल्लई राजगोपालन 5 मई, 2018 ओआरएफ
4. प्रधानमंत्री का मलेशिया और वियतनाम का दौरा, पंकज के. झा, मनोहर परिकर रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान 8 नवंबर, 2010
5. भारत–मलेशिया संबंध, विदेश मंत्रालय, जनवरी 2017
6. भारत, मलेशिया ने शुरू किया सैन्य अभ्यास, राजेश्वरी पिल्लई राजगोपालन 5 मई, 2018 ओआरएफ
7. सम–सामयिक घटना चक्र मई 2017
8. मलेशिया तथा सिंगापुर के साथ संबंधों में मजबूतीः प्रधानमंत्री का हालिया दौराः डॉ. तेमजेनमेरेन ओ, 11 जुलाई 2018, इंडियन कॉउसिंल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स, सप्रु हाउस, नई दिल्ली।
9. भारत, मलेशिया ने शुरू किया सैन्य अभ्यास, राजेश्वरी पिल्लई राजगोपालन 5 मई, 2018 ओआरएफ